RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
अगस्त
26
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

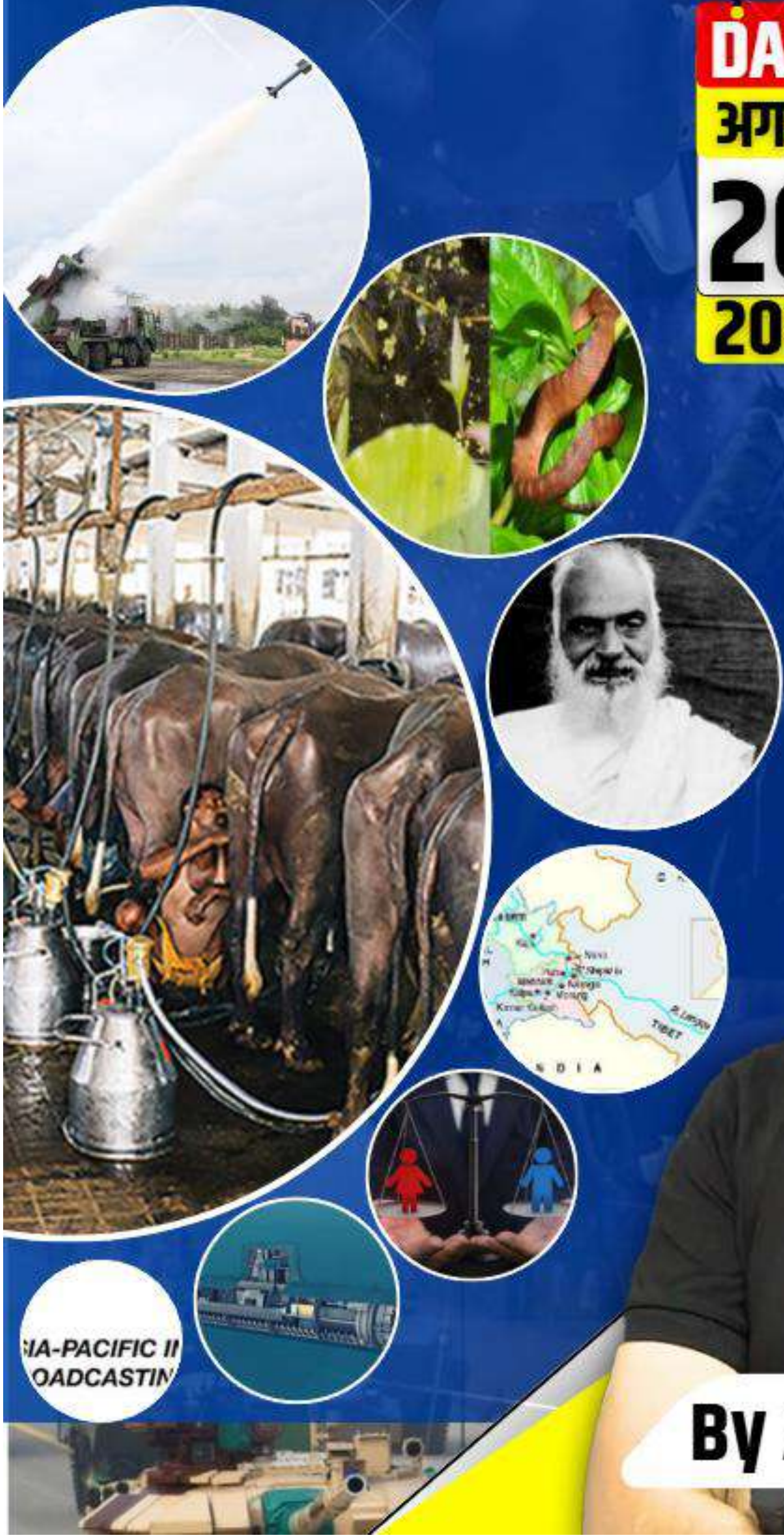

By Ankit Avasthi Sir

इंटीग्रेटेड एयर डिफेंस वेपन सिस्टम / Integrated Air Defense Weapon System

संदर्भ:

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) ने मिशन 'सुदर्शन चक्र' के तहत इंटीग्रेटेड एयर डिफेंस वेपन सिस्टम (IADWS) के पहले उड़ान परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे किए।

समेकित वायु रक्षा हथियार प्रणाली (IADWS):

- **परिचय:** IADWS (Integrated Air Defence Weapon System) एक बहु-स्तरीय (multi-layered) रक्षा प्रणाली है, जिसे विभिन्न हवाई खतरों से देश की सुरक्षा के लिए विकसित किया गया है।
- **मुख्य घटक:**
    1. **क्विक रिएक्शन सरफेस-टू-एयर मिसाइल (QRSAMs)** – तेज प्रतिक्रिया क्षमता वाली सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल।
    2. **एडवांस्ड वेरी शॉर्ट रेंज एयर डिफेंस सिस्टम (VSHORADS)** – अत्यंत कम दूरी की वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली।
    3. **लेज़र आधारित निर्देशित ऊर्जा हथियार (Directed Energy Weapon - DEW)** – लेज़र तकनीक पर आधारित आधुनिक हथियार।
- **हालिया परीक्षण:**
    - चांदीपुर में हाल ही में हुए उड़ान परीक्षणों (flight tests) में IADWS के सभी घटकों ने अपनी भूमिका सफलतापूर्वक निभाई।
    - परीक्षण रेंज उपकरणों (range instruments) द्वारा पुष्टि की गई कि यह प्रणाली कई हवाई खतरों को सटीकता से रोकने और नष्ट करने की क्षमता रखती है।

इंटीग्रेटेड एयर डिफेंस वेपन सिस्टम (IADWS) के घटक:

- **QRSAM (Quick Reaction Surface-to-Air Missile)**: यह तेजी से प्रतिक्रिया देने वाली मिसाइल है, जो मध्यम दूरी पर हवाई खतरों को नष्ट करती है।
- **VSHORADS (Very Short Range Air Defence System):** यह उन्नत मिसाइल प्रणाली बेहद कम दूरी से आने वाले हवाई खतरों को तुरंत समाप्त करने में सक्षम है।
- **DEW (Directed Energy Weapon – लेज़र आधारित हथियार):** यह लेज़र तकनीक से काम करने वाला हथियार है, जो दुश्मन के हवाई खतरों को सटीकता से निष्क्रिय करता है।
- **केंद्रीकृत कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (DRDL, हैदराबाद द्वारा विकसित):** यह पूरे सिस्टम को एकीकृत करके QRSAM, VSHORADS और DEW का संचालन करता है।

DRDO (Defence Research and Development Organisation)

स्थापना (Formation):

- DRDO की स्थापना वर्ष **1958** में हुई।
- यह संगठन तीन संस्थाओं के विलय से बना:
    1. **Technical Development Establishment (TDEs) – भारतीय सेना का तकनीकी विकास प्रतिष्ठान**
    2. **Directorate of Technical Development and Production (DTDP) – तकनीकी विकास और उत्पादन निदेशालय**
    3. **Defence Science Organisation (DSO) – रक्षा विज्ञान संगठन**

संगठनात्मक संरचना (Organisational Structure):

- **नेतृत्व (Headed by):** DRDO का नेतृत्व **रक्षा अनुसंधान और विकास विभाग (Department of Defence R&D)** के सचिव और DRDO के **महानिदेशक (Director General – DG)** द्वारा किया जाता है।
- **सहायक अधिकारी (Assisting Officers):** DG की सहायता वैज्ञानिक करते हैं, जिन्हें **Chief Controllers** कहा जाता है। ये अलग-अलग तकनीकी क्षेत्रों की जिम्मेदारी संभालते हैं।

तकनीकी क्लस्टर (Technology Clusters):

DRDO को **7 प्रमुख तकनीकी क्लस्टर** में बांटा गया है –

1. Aeronautics (विमानन विज्ञान)
2. Armament (शस्त्रास्त्र)
3. Combat Engineering (युद्ध इंजीनियरिंग)
4. Electronics and Communication Systems (इलेक्ट्रॉनिक्स व संचार प्रणाली)
5. Micro Electronic Devices and Computational Systems (सूक्ष्म इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और कम्प्यूटेशनल सिस्टम)
6. Life Sciences (जीवन विज्ञान)

आक्रामक प्रजातियों से निपटने की लागत / Cost of Dealing with Invasive Species

संदर्भ:

नेचर इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन में प्रकाशित हालिया अध्ययन के अनुसार, **1960 से अब तक आक्रामक गैर-देशी पौधों और जानवरों ने वैश्विक स्तर पर 2.2 ट्रिलियन डॉलर** से अधिक का नुकसान पहुंचाया है, और वास्तविक लागत पहले के अनुमानों से 16 गुना अधिक होने की संभावना जताई गई है।

आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ (Invasive Alien Species – IAS):

परिभाषा: आक्रामक प्रजातियाँ वे गैर-स्थानीय (non-native) वनस्पति और जीव हैं, जो स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र (ecosystem), अर्थव्यवस्था या मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाती हैं।

वैश्विक प्रभाव:

- सबसे ज़्यादा हानिकारक आक्रामक प्रजातियाँ पौधे रहे, जिनसे लगभग **$926.38 अरब** का नुकसान हुआ।
- इनके बाद क्रमशः:
  - **आर्थ्रोपोड्स (Arthropods): $830.29 अरब**
  - **स्तनधारी (Mammals): $263.35 अरब**
- शोधकर्ताओं के अनुसार, **व्यापार (Trade) और यात्रा (Travel)** इनके फैलाव के मुख्य साधन हैं।

भारत में आक्रामक प्रजातियाँ:

- **MoEFCC** (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय) ने भारत में **154 से अधिक आक्रामक जीव प्रजातियों** को मान्यता दी है, जो स्थलीय (terrestrial), मीठे पानी (freshwater) और समुद्री (marine) पारिस्थितिकी तंत्र में फैली हैं।
- पौधों में **लैंटाना (Lantana camara)** और **सेना स्पेक्टाबिलिस (Senna spectabilis)** ने पश्चिमी घाट (Western Ghats) के बड़े हिस्सों पर क जा कर लिया है।
- विशेषकर, **लैंटाना (Lantana camara)** ने अकेले भारत के **40% बाघ आवास (Tiger habitats)** पर क जा कर लिया है, जिससे शिकार की उपलब्धता घट रही है और जंगलों की संरचना बदल रही है।

उदाहरण:

- जापानी नॉटवीड (Japanese knotweed – Reynoutria japonica)
- कॉमन लैंटाना (Common lantana – Lantana camara)

वैश्विक नीति प्रतिक्रियाएँ:

कई अंतरराष्ट्रीय समझौते जैविक आक्रमण (biological invasions) को रोकने का प्रयास करते हैं:

- **Ballast Water Management Convention**: जहाजों के माध्यम से जलीय प्रजातियों के प्रसार को रोकता है।
- **Convention on Biological Diversity**: देशों को उन विदेशी प्रजातियों (alien species) को रोकने, नियंत्रित करने या समाप्त करने के लिए बाध्य करता है, जो पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरा हैं।

भारत के प्रयास: जैविक आक्रमण पर नियंत्रण

भारत ने कई पहलें की हैं, जिनमें प्रमुख हैं:

राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति और कार्ययोजना (NBSAP)

- यह Kunming-Montreal Global Biodiversity Framework के अनुरूप है।
- आक्रामक प्रजातियों के प्रबंधन को एक मुख्य प्राथमिकता बनाया गया है।
- यह Whole-of-Government और Whole-of-Society दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें कई मंत्रालयों और हितधारकों की भागीदारी होती है।
- मुख्य बिंदु:
  - क्षतिग्रस्त पारिस्थितिक तंत्र का पुनर्स्थापन
  - स्थलीय और समुद्री क्षेत्रों की सुरक्षा
  - प्रदूषण नियंत्रण और आक्रामक प्रजातियों का निवारण
  - जैव विविधता शासन में समुदाय की भागीदारी

वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रलेखन (Scientific Research and Documentation): Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) ने आक्रामक प्रजातियों पर एक व्यापक **Handbook on Invasive Species** प्रकाशित किया।

भारत का डेयरी क्षेत्र / Dairy sector of India

संदर्भ:

भारत का कम लागत वाला सहकारी-आधारित डेयरी मॉडल वैश्विक स्तर पर मूल्य प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करता है, लेकिन सस्ते श्रम और कम उत्पादकता पर निर्भरता इसके दीर्घकालिक स्थायित्व के लिए गंभीर चुनौतियां पेश करती है।

भारत का डेयरी क्षेत्र:

वैश्विक नेतृत्व: भारत दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। यह वैश्विक दूध उत्पादन का **24.76%** योगदान देता है।

उत्पादन वृद्धि: दूध उत्पादन **2014-15 में 146.31 मिलियन टन** से बढ़कर **2023-24 में 239.30 मिलियन टन** हो गया।

आर्थिक योगदान

- डेयरी भारत का सबसे बड़ा कृषि उत्पाद है।
- यह **GDP में 5%** का योगदान देता है और **8 करोड़ से अधिक किसानों को रोजगार** प्रदान करता है।

विकास प्रदर्शन: पशुपालन क्षेत्र (Livestock sector) की औसत वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) **2014-15 से 2020-21 तक 7.9%** रही, जो कृषि क्षेत्र से अधिक है।

प्रति व्यक्ति उपलब्धता: 2023-24 में प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता 471 ग्राम/दिन हो गई है, जो वैश्विक औसत 322 ग्राम/दिन से कहीं अधिक है।

शीर्ष दुग्ध उत्पादक राज्य: **उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश** दूध उत्पादन में शीर्ष स्थान पर हैं।

भारत का डेयरी क्षेत्र: उत्पादन और निर्यात:

उत्पादन और निर्यात:

- भारत केवल दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश ही नहीं है, बल्कि यह **दुग्ध उत्पादों का अग्रणी वैश्विक निर्यातक** भी है।

सरकारी पहल: भारतीय डेयरी क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाने और किसानों का समर्थन करने के लिए कई योजनाएँ लागू की गई हैं:

1. **राष्ट्रीय गो-कल्याण मिशन** – देशी नस्लों के सुधार और संरक्षण के लिए।
2. **राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) कार्यक्रम** – दूध उत्पादन और विपणन में सुधार।
3. **राज्य सहकारी डेयरी महासंघ** – राज्य स्तर पर दूध उत्पादन और विपणन को बढ़ावा।
4. **राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम** – ग्रामीण डेयरी उद्योग को सशक्त बनाने के लिए।
5. **डेयरी उद्यमिता विकास योजना (DEDS)** – नए डेयरी उद्यमियों को वित्तीय और तकनीकी सहायता।

भारत के डेयरी क्षेत्र का महत्व

आर्थिक योगदान:

- भारत का डेयरी क्षेत्र सबसे बड़ा कृषि उत्पाद है।
- यह **राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5%** का योगदान देता है।
- सीधे **8 करोड़ से अधिक किसानों** को रोजगार प्रदान करता है।

पोषण सुरक्षा:

- दूध प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन का प्रमुख स्रोत है।
- यह **आहार विविधता** और पोषण स्तर को सुधारने में मदद करता है।

निर्यात क्षमता:

- भारत **स्किम्ड मिल्क पाउडर, मक्खन, घी** जैसी डेयरी वस्तुओं का आपूर्तिकर्ता बनकर उभर रहा है।
- मुख्य निर्यात क्षेत्र: **एशिया और अफ्रीका।**

महिलाओं की भागीदारी:

- डेयरी सहकारी समितियों में **35% सदस्य महिलाएं** हैं।
- यह क्षेत्र **लिंग समावेशी विकास** में अहम भूमिका निभाता है।

आगे की राह –

उत्पादकता बढ़ाएँ:

- नस्ल सुधार को तेज करें (AI, IVF, देशी आनुवंशिकी)।
- पशुओं के पोषण में सुधार और आहार संशोधन।

बुनियादी ढांचे को मजबूत करें: **कोल्ड चेन, चिलिंग सेंटर और संगठित संग्रह प्रणाली** का विकास।

सहकारी ढांचे का विस्तार:

- अधिक किसानों को **संगठित सहकारी समितियों** में शामिल करें।
- स्थानीय स्तर की सहकारी समितियाँ **असमानताओं और अनावश्यक लागत** को कम कर सकती हैं।

प्रथम भारतीय अध्यक्ष के रूप में विट्ठलभाई पटेल की 100वीं वर्षगांठ / 100th Anniversary of Vitthalbhai Patel as First Indian Speaker

संदर्भ:

नई दिल्ली में **अखिल भारतीय अध्यक्षों का सम्मेलन** आयोजित किया गया, जो विट्ठलभाई पटेल के केंद्रीय विधान सभा के पहले भारतीय अध्यक्ष के रूप में चुने जाने की 100वीं वर्षगांठ को चिह्नित करता है।

केंद्रीय विधायी सभा (Central Legislative Assembly - CLA):

- **स्थापना:** केंद्रीय विधायी सभा (CLA) ब्रिटिश भारत की निचली सदन (Lower House) थी, जिसे भारत सरकार अधिनियम 1919 (Government of India Act, 1919) के तहत मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के रूप में स्थापित किया गया।
- **द्विसदनीय व्यवस्था:** 1919 के अधिनियम ने द्विसदनीय व्यवस्था (Two-House System) की शुरुआत की, जिसमें –
    1. केंद्रीय विधायी सभा (CLA) – निचला सदन
    2. राज्य परिषद (Council of State) – ऊपरी सदन
- **गठन:** CLA का गठन 1921 में हुआ, जो 1920 के चुनावों के बाद अस्तित्व में आया।
- **संरचना (Composition):** इसमें कुल 145 सदस्य थे –
    - 104 सदस्य चुने हुए (Elected)
    - 41 सदस्य गवर्नर-जनरल द्वारा नामित (Nominated)
- **पद व कार्य (Powers & Functions):**
    - बजट पर बहस करना और प्रस्ताव पास करना।
    - सदस्य प्रश्न पूछ सकते थे, प्रस्ताव पेश कर सकते थे और अनुदान की मांगों पर मतदान कर सकते थे।
    - लेकिन गवर्नर-जनरल के पास वीटो अधिकार (Veto Power) था, और वे सभा की स्वीकृति के बिना भी विधेयक को प्रमाणित (Certify) कर सकते थे।
- **समापन:** CLA को 14 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता और संविधान सभा के गठन के साथ भंग कर दिया गया।

विट्ठलभाई पटेल:

अध्यक्ष (Speaker) के रूप में योगदान (1925–1930)

- 1925 में वे **केंद्रीय विधान सभा** के पहले भारतीय अध्यक्ष (स्पीकर) बने।
- उन्होंने विधायिका (Legislature) की स्वतंत्रता को कार्यपालिका (Executive) से अलग करने पर जोर दिया और **संसदीय स्वायत्तता** की नींव रखी।
- उन्होंने **विधायी विभाग (Legislative Department)** की स्थापना की। बाद में संविधान सभा ने भी इस व्यवस्था को अपनाया और आज भी संसद व राज्य विधानसभाओं में अध्यक्षों के अधीन यह परंपरा जारी है।

राजनीतिक सफर:

- 1912 में संपत्ति योग्यता (Property ownership) के आधार पर चुनाव लड़ने के बाद वे **बंबई विधान परिषद (Bombay Legislative Council)** के सदस्य बने।
- 1917 में उन्होंने **नि:शुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा (Free and Compulsory Elementary Education)** का प्रस्ताव रखा। हालाँकि यह बिल लागू नहीं हुआ, पर इससे उनके सुधारवादी दृष्टिकोण का पता चलता है।
- 1920 में वे **इम्पीरियल लेजिस्लेटिव असेंबली (Imperial Legislative Assembly)** में पहुँचे। यहाँ वे सबसे सक्रिय सदस्यों में से एक थे और एक सत्र में ही उन्होंने **62 प्रश्न** पूछे।

गांधीजी से मतभेद:

- 1922 में महात्मा गांधी द्वारा **असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement)** को वापस लेने के निर्णय से उन्होंने असहमति जताई।
- 1923 में वे **स्वराज पार्टी (Swaraj Party)** के संस्थापक सदस्य बने। यह पार्टी "प्रो-चेंजर" (Pro-Changer) कहलाती थी, जो मानती थी कि विधानसभाओं में प्रवेश कर औपनिवेशिक शासन की कमजोरियों को उजागर किया जाए।

ऑल इंडिया स्पीकर्स' कॉन्फ्रेंस 2025:

- **स्पीकर की भूमिका का पुन: स्मरण:** स्पीकर न केवल विधानमंडल की गरिमा के संरक्षक हैं, बल्कि लोकतंत्र के सेवक भी हैं, जिनका प्रमुख दायित्व निष्पक्षता बनाए रखना है।
- **लोकतंत्र की आत्मा – बहस:** यदि संसद और विधानसभाओं में बहस नहीं होगी, तो वे केवल "निर्जीव इमारतें" बनकर रह जाएँगी।
- **कानून बनाने के उद्देश्य:**
    - जनता का कल्याण
    - समावेशी विकास
    - कार्यकुशलता

शिपकी ला दर्रा / Shipki La Pass

संदर्भ:

हाल ही में चीन के विदेश मंत्री वांग यी की भारत यात्रा के दौरान, चीन ने हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में स्थित **शिपकी-ला दर्रे से व्यापार पुनः शुरू करने** के प्रस्ताव को सैद्धांतिक रूप से मंजूरी दी है। यह जानकारी राज्य सरकार के एक बयान में दी गई।

शिपकी ला दर्रा (Shipki La Pass) के बारे में:

क्या है शिपकी ला?

- शिपकी ला एक **मोटर योग्य उच्च-ऊंचाई वाला पर्वतीय दर्रा** है।
- ऊँचाई: **3,930 मीटर**
- जिला: **किन्नौर, हिमाचल प्रदेश**
- यह भारत-चीन सीमा का हिस्सा है।

स्थान और भौगोलिक महत्व:

- यह **लाइन ऑफ़ एक्चुअल कंट्रोल (LAC)** पर स्थित है, जो भारत और तिब्बत (चीन) के बीच सीमा रेखा है।
- **सतलज नदी (Langqen Zangbo)** भारत में इसी दर्रे से प्रवेश करती है।
- पुराना नाम: **पेमा ला (Pema La)** या "Shared Gate", जो **सांस्कृतिक एकता** का प्रतीक है।

शिपकी ला दर्रे की विशेषताएँ:

- भारत के **सर्वोच्च मोटर योग्य दर्रों में से एक**।
- **सीमा चौकी** के रूप में कार्य करता है, जिसे **इंडो-तिब्बतियन बॉर्डर पुलिस (ITBP)** द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
- **भारतीय नागरिकों के लिए अब परमिट की आवश्यकता नहीं–आधार आधारित प्रवेश** प्रणाली लागू की गई है।

किलाउएआ ज्वालामुखी / Kilauea Volcano

संदर्भ:

दुनिया के सबसे सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक, हवाई का **किलाउआ ज्वालामुखी** एक बार फिर फटने लगा है।

किलाउएआ ज्वालामुखी (Kilauea Volcano) के बारे में:

- यह **हवाई द्वीपसमूह के छह सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक** है।
- प्रकार: **शील्ड वोल्कैनो (Shield Volcano)**, जो आमतौर पर विस्फोटक नहीं बल्कि **बहावशील लावा** के लिए जाना जाता है।
- स्थान: **हवाई वोल्कैनो नेशनल पार्क** में, जहाँ मौना लोआ दुनिया का सबसे बड़ा ज्वालामुखी) भी स्थित है।
- गतिविधि: मौना लोआ से छोटा होने के बावजूद, किलाउएआ अधिक सक्रिय है और **1983 से लगातार फूट रहा है**।

ज्वालामुखी क्या है?

- यह पृथ्वी की परत में एक **दरार या उद्घाटन** है, जिससे **लावा, गैस और राख** सतह पर निकलते हैं।
- प्रकार:
  1. **सक्रिय ज्वालामुखी:** नियमित रूप से फूटता है (उदा. किलाउएआ, बैरन आइलैंड)।
  2. **सुप्त ज्वालामुखी:** लंबे समय से निष्क्रिय, फिर भी भविष्य में फूट सकता है (उदा. वेसुवियस, इटली)।
  3. **मृत ज्वालामुखी:** हजारों वर्षों से निष्क्रिय, फिर फूटने की संभावना कम (उदा. डेक्कन ट्रैप्स, भारत)।

भारत में ज्वालामुखी:

- **सक्रिय:** बैरन आइलैंड (अंडमान और निकोबार) – भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी।
- **सुप्त:** नारकोंडम आइलैंड (अंडमान)।
- **मृत:** डेक्कन पठार (~65 मिलियन साल पहले बड़े ज्वालामुखी गतिविधि के अवशेष)।

अंगदान में लैंगिक असमानता / Gender disparity

संदर्भ:

राष्ट्रीय अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (NOTTO) ने 10 सूत्रीय परामर्श जारी किया है, जिसके तहत **अंग प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा कर रही महिला मरीजों और दिवंगत दाताओं की महिला परिजनों को लाभार्थी के रूप में प्राथमिकता** दी जाएगी।

ऑर्गन डोनेशन की स्थिति:

- **परिभाषा:** ऑर्गन ट्रांसप्लांटेशन/डोनेशन एक शल्य चिकित्सा प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति से अंग, ऊतक या कोशिकाओं का समूह निकालकर दूसरे व्यक्ति में प्रत्यारोपित किया जाता है।
- **वैश्विक परिदृश्य:** WHO के अनुसार, हर साल दुनिया भर में लगभग **1,30,000 सॉलिड ऑर्गन ट्रांसप्लांट** किए जाते हैं, जो केवल **10% वैश्विक आवश्यकता** को पूरा करते हैं।
- **भारत में लिंग असमानता:** NOTTO के आंकड़ों के अनुसार, 2019-2023 में **63.8% लाइव ऑर्गन डोनर महिलाएँ** थीं, जबकि **69.8% अंग पुरुषों को प्राप्त** हुए।

लिंग असमानता के कारण:

1. **पितृसत्तात्मक सामाजिक मान्यताएँ:** महिलाओं को पारिवारिक देखभालकर्ता माना जाता है और वे अक्सर दूसरों की भलाई के लिए "बलिदान" करने की सामाजिक अपेक्षा में रहती हैं।
2. **आर्थिक कारण:** पुरुष परिवार का मुख्य कमाऊ माना जाता है। परिवार उनकी कमाई पर जोखिम उठाने से हिचकिचाता है।
3. **महिलाओं के स्वास्थ्य की अनदेखी:** पुरुष रोगियों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है, जबकि महिला मरीज ऑर्गन प्राप्तकर्ताओं में कम प्रतिनिधित्व रखती हैं।

एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन / AIP

संदर्भ:

केंद्र सरकार ने रक्षा मंत्रालय और मझगांव डॉकयार्ड्स लिमिटेड को 'प्रोजेक्ट 75 इंडिया' के तहत जर्मन सहयोग से भारत में बनने वाली 6 पनडुब्बियों की खरीद के सौदे पर बातचीत शुरू करने की मंज़ूरी दे दी है।

एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (AIP) प्रणाली से लैस पनडुब्बियां

- **तकनीक की विशेषता:** AIP पनडुब्बियों को **कम से कम 3 हफ्ते तक पानी के भीतर रहने की क्षमता** देती है। पारंपरिक डीज़ल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों को बार-बार सतह पर आकर बैटरी चार्ज करनी पड़ती है, जिससे दुश्मन के द्वारा उन्हें देख लिया जाने का खतरा रहता है।

AIP तकनीक के मुख्य पहलू:

1. **बिजली उत्पादन (Electricity Generation):** AIP सिस्टम पनडुब्बी को आगे बढ़ाने के लिए इलेक्ट्रिक मोटर को बिजली प्रदान करता है या बैटरियों को चार्ज करता है।
2. **सहायक शक्ति स्रोत (Auxiliary Power Source):** यह प्रणाली डीज़ल इंजनों का पूरक होती है, जो मुख्य रूप से सतह पर पनडुब्बी को चलाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।
3. **रेट्रोफिटिंग (Retrofitting):** मौजूदा पनडुब्बियों में AIP सिस्टम को नए हुल (Hull) सेक्शन डालकर स्थापित किया जा सकता है, जो AIP मॉड्यूल को समाहित करता है।

Project 75 – भारत की पनडुब्बी पहल:

- **प्रारंभ और अनुबंध:** Project 75 का अनुबंध **2005 में** Naval Group और Mazagon Dock Shipbuilders Ltd (MDL) के साथ हस्ताक्षरित हुआ।

पनडुब्बियां: Project 75 के तहत छह पनडुब्बियां बनाई गई हैं:

1. INS Kalvari
2. INS Vagsheer
3. INS Vela
4. INS Khanderi
5. INS Karanj
6. INS Vagir

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
इतिहास
अर्थव्यवस्था
भूगोल
भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था
1500x4
₹6000/-
₹4500/-
रोज़ाना लाइव क्लासेस
साप्ताहिक टेस्ट
क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
लाइव डाउट सेशन
रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न
COURSE VALIDITY 1 YEAR

FUNDAMENTALS OF STOCK MARKET

LEARN HOW TO TRADE

FOUNDATION COURSE OF MUTUAL FUND

INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH

COMBO OFFERS

COURSE FEE

~~₹4000/-~~

OFFER PRICE

₹2800/-

Course Validity
1 YEAR

BBK
Baaten Bazaar ki

एक निवेश समझदारी से..

Baaten Bazar Ki
FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE

BBK
BaatenBazar ki

EMI AVAILABLE

+ **(FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)**

- Long-Term Investing Foundations
- Principles of Value Investing and Stock
- Portfolio Construction Mastery
- Sectoral Investing
- Stock Picking Framework
- Active Portfolio Management Techniques
- Mega Cap vs Mid Cap Strategy

SPECIAL BONUS

COURSE VALIDITY
1 YEAR